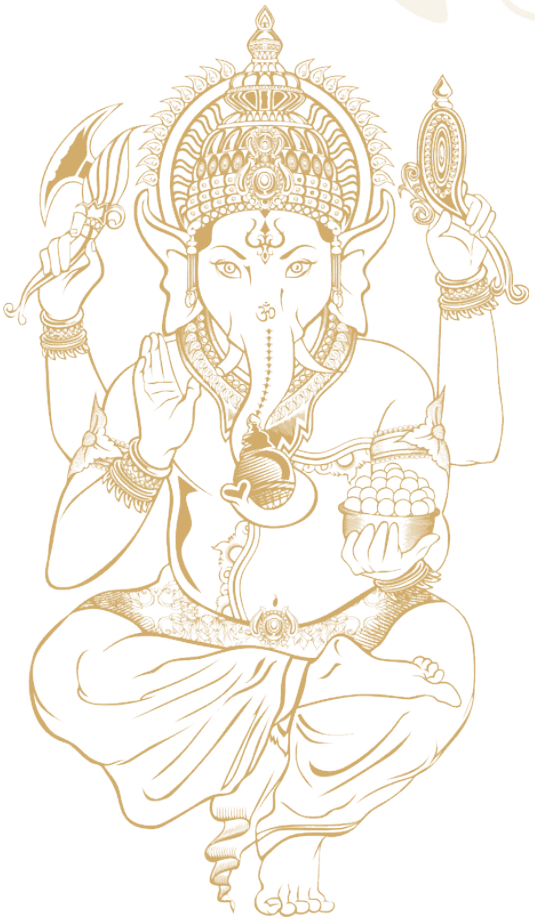

Miss Keerti Mishra

29 May 2020

05:55 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119310101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**29/05/2020**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**05:55:00 घंटे**
इष्ट	01:16:25 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	05:33:52 घंटे
वेलान्तर	00:02:33 घंटे
साम्पातिक काल	22:01:52 घंटे
सूर्योदय	05:24:26 घंटे
सूर्यास्त	19:12:59 घंटे
दिनमान	13:48:33 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	13:58:30 वृष
लग्न के अंश	20:44:47 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 4**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	व्याघात
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो-डौली
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1942	ज्येष्ठ	8
पंजाबी	संवत : 2077	ज्येष्ठ	16
बंगाली	सन् : 1427	ज्येष्ठ	15
तमिल	संवत : 2077	वैकासी	16
केरल	कोल्लम : 1195	इदवम	15
नेपाली	संवत : 2077	ज्येष्ठ	16
चैत्रादि	संवत : 2077	ज्येष्ठ	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2077	ज्येष्ठ	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 21:55:34
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 06:58:01 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग ___: व्याघात
योग समाप्ति काल _____: 22:05:37 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ___: गर
करण समाप्ति काल _____: 10:44:56 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 56:10:50
भभोग _____: 58:48:20
भोग्य दशा काल _____: बुध 0 वर्ष 9 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

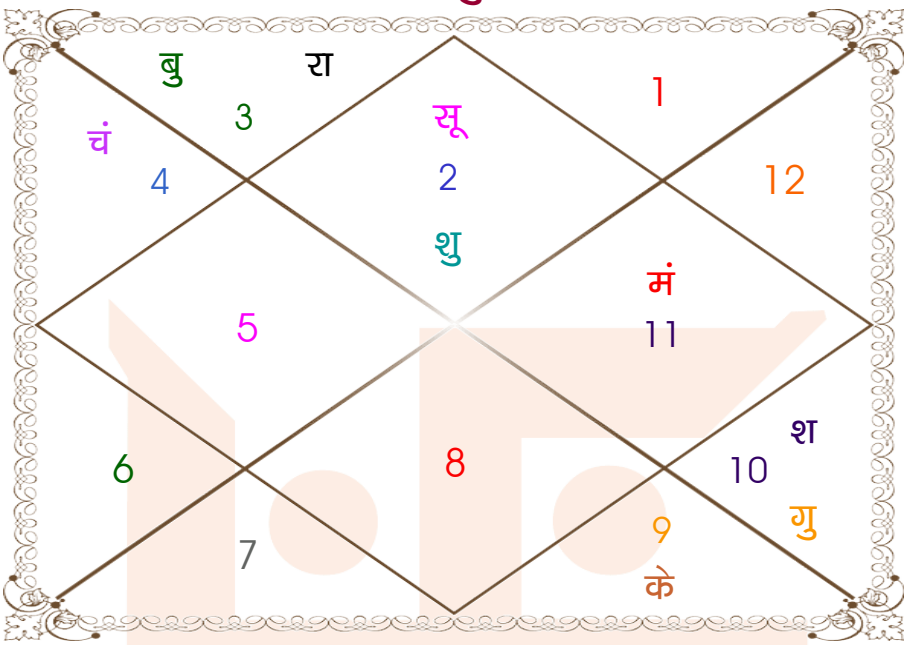

चन्द्र कुंडली

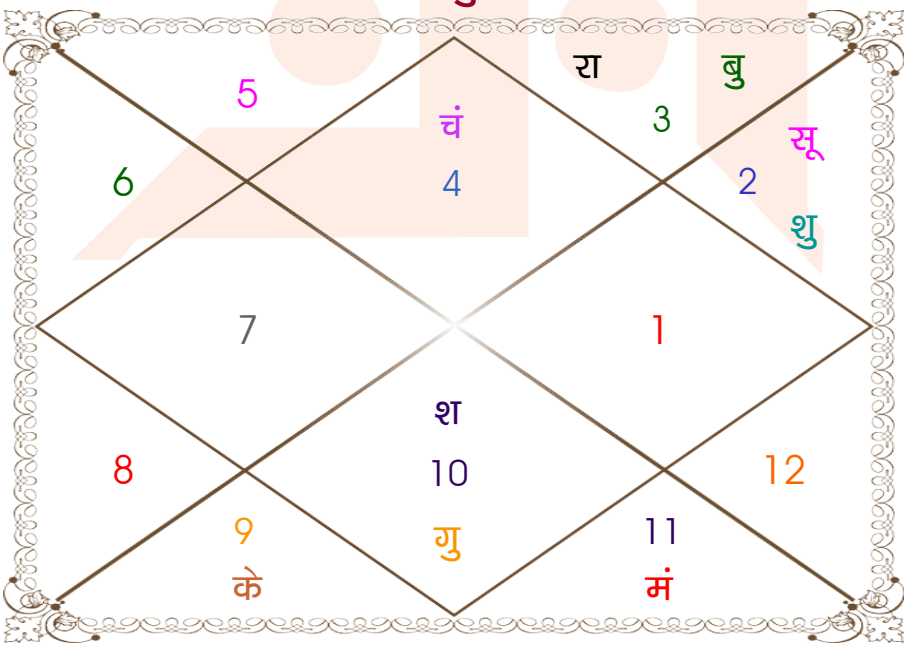

Santosh Jyotish Vani
Suraj Kumar Roy (M.A JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL,M.A ECONOMICS,M.COM FINANCE, B.ED)
A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension
9654081887
mail2suraj7836@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

लग्न कुंडली

विंशोत्तरी

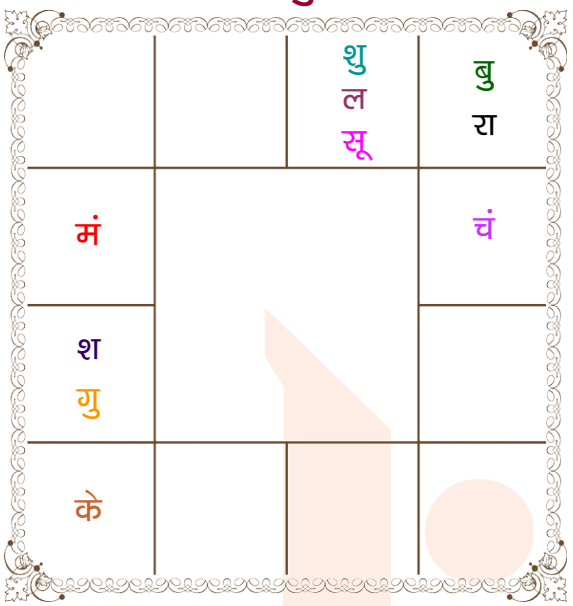

बुध 0वर्ष 9मा 5दि

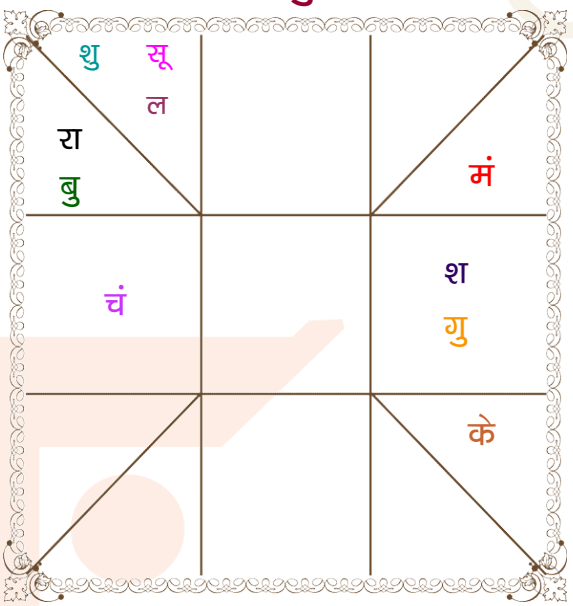

बुध	
29/05/2020	
05/03/2124	
बुध	04/03/2021
केतु	04/03/2028
शुक्र	04/03/2048
सूर्य	05/03/2054
चन्द्र	04/03/2064
मंगल	05/03/2071
राहु	04/03/2089
गुरु	05/03/2105
शनि	05/03/2124

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 2मा 4दि

उल्का	
03/08/2025	
03/08/2031	
उल्का	03/08/2026
सिद्धा	03/10/2027
संकटा	01/02/2029
मंगला	03/04/2029
पिंगला	03/08/2029
धान्या	01/02/2030
भ्रामरी	03/10/2030
भद्रिका	03/08/2031

Santosh Jyotish Vani
Suraj Kumar Roy (M.A JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL,M.A ECONOMICS,M.COM FINANCE, B.ED)
A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension
9654081887
mail2suraj7836@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	20:44:47	359:46:08	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			वृष	13:58:30	00:57:34	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			कर्क	29:23:57	13:43:27	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	स्वराशि
मंगल			कुंभ	16:34:34	00:40:03	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
बुध			मिथु	06:12:58	01:20:47	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	स्वराशि
गुरु	व		मक	02:46:32	00:02:42	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	नीच राशि
शुक्र	व		वृष	22:55:55	00:33:50	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	सूर्य	स्वराशि
शनि	व		मक	07:33:49	00:01:42	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	स्वराशि
राहु			मिथु	05:06:22	00:00:47	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	उच्च राशि
केतु			धनु	05:06:22	00:00:47	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	उच्च राशि
हर्ष			मेष	14:16:12	00:03:06	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	---
नेप			कुंभ	26:39:06	00:00:49	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
प्लूटो	व		मक	00:36:03	00:00:53	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			कुंभ	04:09:40	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:08:14

लग्न-चलित

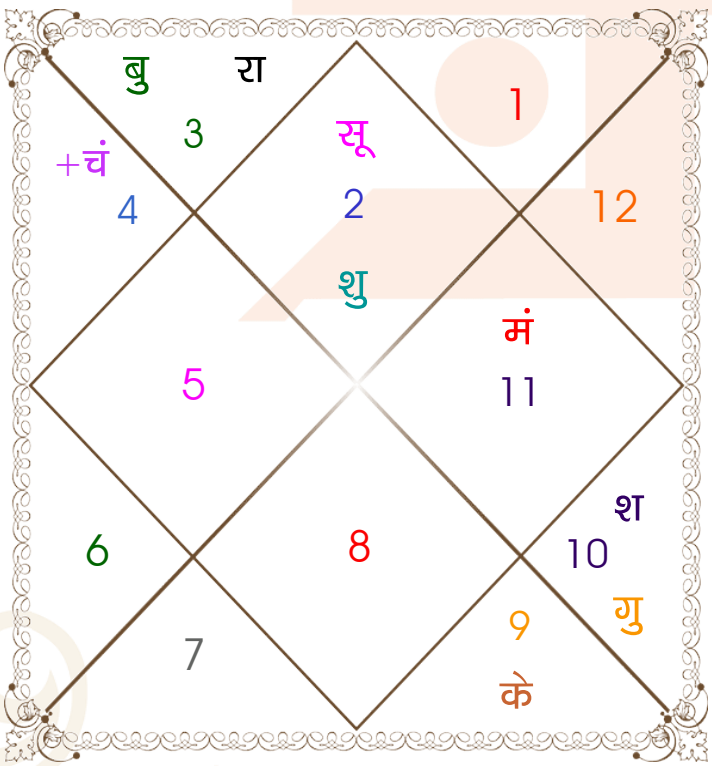

चन्द्र कुंडली

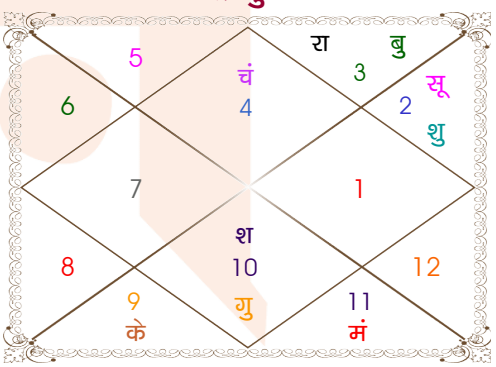

नवमांश कुंडली

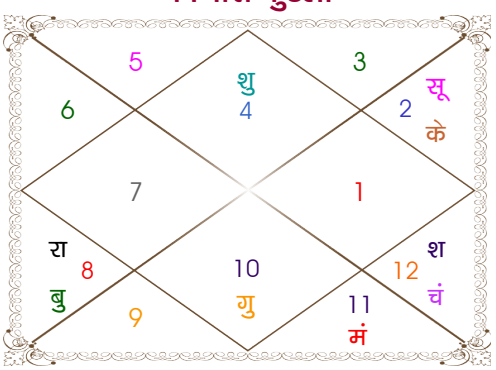

Santosh Jyotish Vani
Suraj Kumar Roy (M.A JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL,M.A ECONOMICS,M.COM FINANCE, B.ED)
A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension
9654081887
mail2suraj7836@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	02:58:56	वृष	20:44:47
2	मिथुन	02:58:56	मिथुन	15:13:05
3	मिथुन	27:27:14	कर्क	09:41:23
4	कर्क	21:55:32	सिंह	04:09:40
5	सिंह	21:55:32	कन्या	09:41:23
6	कन्या	27:27:14	तुला	15:13:05
7	वृश्चिक	02:58:56	वृश्चिक	20:44:47
8	धनु	02:58:56	धनु	15:13:05
9	धनु	27:27:14	मकर	09:41:23
10	मकर	21:55:32	कुम्भ	04:09:40
11	कुम्भ	21:55:32	मीन	09:41:23
12	मीन	27:27:14	मेष	15:13:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	20:44:47
2	मिथुन	14:33:46
3	कर्क	07:49:53
4	सिंह	04:09:40
5	कन्या	06:24:28
6	तुला	13:59:53
7	वृश्चिक	20:44:47
8	धनु	14:33:46
9	मकर	07:49:53
10	कुम्भ	04:09:40
11	मीन	06:24:28
12	मेष	13:59:53

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

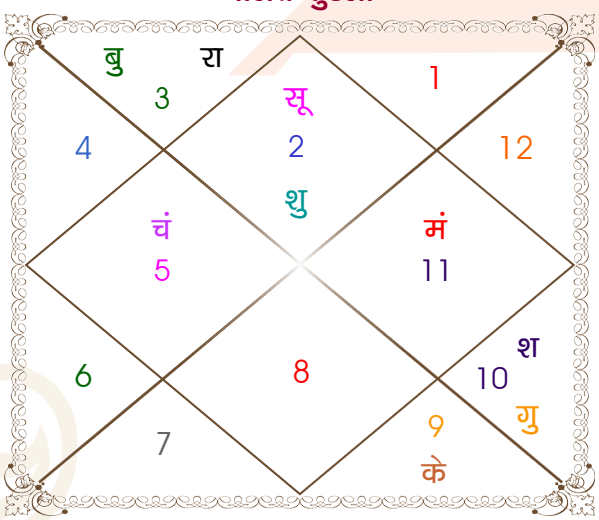

भाव कुंडली

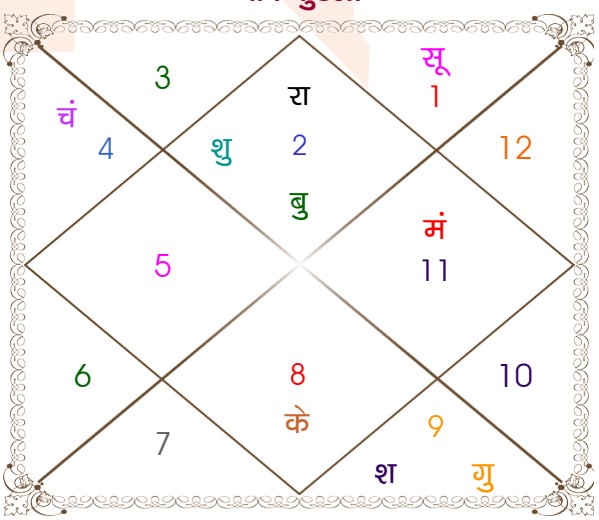

Santosh Jyotish Vani
Suraj Kumar Roy (M.A JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL,M.A ECONOMICS,M.COM FINANCE, B.ED)
A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension
9654081887
mail2suraj7836@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 9 मास 5 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
29/05/2020		04/03/2021		04/03/2028		04/03/2048		05/03/2054	
04/03/2021		04/03/2028		04/03/2048		05/03/2054		04/03/2064	
	00/00/0000	केतु	01/08/2021	शुक्र	05/07/2031	सूर्य	22/06/2048	चंद्र	03/01/2055
	00/00/0000	शुक्र	01/10/2022	सूर्य	04/07/2032	चंद्र	21/12/2048	मंगल	04/08/2055
	00/00/0000	सूर्य	06/02/2023	चंद्र	05/03/2034	मंगल	28/04/2049	राहु	02/02/2057
	00/00/0000	चंद्र	07/09/2023	मंगल	05/05/2035	राहु	23/03/2050	गुरु	04/06/2058
	00/00/0000	मंगल	03/02/2024	राहु	05/05/2038	गुरु	09/01/2051	शनि	03/01/2060
	00/00/0000	राहु	20/02/2025	गुरु	03/01/2041	शनि	22/12/2051	बुध	04/06/2061
	00/00/0000	गुरु	27/01/2026	शनि	04/03/2044	बुध	28/10/2052	केतु	03/01/2062
	29/05/2020	शनि	08/03/2027	बुध	03/01/2047	केतु	04/03/2053	शुक्र	04/09/2063
शनि	04/03/2021	बुध	04/03/2028	केतु	04/03/2048	शुक्र	05/03/2054	सूर्य	04/03/2064

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
04/03/2064		05/03/2071		04/03/2089		05/03/2105		05/03/2124	
05/03/2071		04/03/2089		05/03/2105		05/03/2124		30/05/2140	
मंगल	31/07/2064	राहु	15/11/2073	गुरु	23/04/2091	शनि	08/03/2108	बुध	02/08/2126
राहु	19/08/2065	गुरु	10/04/2076	शनि	03/11/2093	बुध	16/11/2110	केतु	30/07/2127
गुरु	26/07/2066	शनि	15/02/2079	बुध	09/02/2096	केतु	26/12/2111	शुक्र	30/05/2130
शनि	04/09/2067	बुध	03/09/2081	केतु	15/01/2097	शुक्र	25/02/2115	सूर्य	05/04/2131
बुध	31/08/2068	केतु	22/09/2082	शुक्र	16/09/2099	सूर्य	07/02/2116	चंद्र	04/09/2132
केतु	27/01/2069	शुक्र	21/09/2085	सूर्य	05/07/2100	चंद्र	07/09/2117	मंगल	01/09/2133
शुक्र	29/03/2070	सूर्य	16/08/2086	चंद्र	04/11/2101	मंगल	17/10/2118	राहु	20/03/2136
सूर्य	04/08/2070	चंद्र	15/02/2088	मंगल	11/10/2102	राहु	23/08/2121	गुरु	26/06/2138
चंद्र	05/03/2071	मंगल	04/03/2089	राहु	05/03/2105	गुरु	05/03/2124	शनि	30/05/2140

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 0 वर्ष 9 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
20/02/2025		27/01/2026		08/03/2027		04/03/2028		05/07/2031	
27/01/2026		08/03/2027		04/03/2028		05/07/2031		04/07/2032	
गुरु	07/04/2025	शनि	01/04/2026	बुध	28/04/2027	शुक्र	23/09/2028	सूर्य	23/07/2031
शनि	31/05/2025	बुध	29/05/2026	केतु	19/05/2027	सूर्य	23/11/2028	चंद्र	22/08/2031
बुध	18/07/2025	केतु	21/06/2026	शुक्र	19/07/2027	चंद्र	04/03/2029	मंगल	13/09/2031
केतु	07/08/2025	शुक्र	28/08/2026	सूर्य	06/08/2027	मंगल	15/05/2029	राहु	07/11/2031
शुक्र	03/10/2025	सूर्य	17/09/2026	चंद्र	05/09/2027	राहु	13/11/2029	गुरु	25/12/2031
सूर्य	20/10/2025	चंद्र	21/10/2026	मंगल	26/09/2027	गुरु	24/04/2030	शनि	21/02/2032
चंद्र	17/11/2025	मंगल	13/11/2026	राहु	20/11/2027	शनि	03/11/2030	बुध	13/04/2032
मंगल	07/12/2025	राहु	13/01/2027	गुरु	07/01/2028	बुध	25/04/2031	केतु	04/05/2032
राहु	27/01/2026	गुरु	08/03/2027	शनि	04/03/2028	केतु	05/07/2031	शुक्र	04/07/2032

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
04/07/2032		05/03/2034		05/05/2035		05/05/2038		03/01/2041	
05/03/2034		05/05/2035		05/05/2038		03/01/2041		04/03/2044	
चंद्र	24/08/2032	मंगल	30/03/2034	राहु	16/10/2035	गुरु	11/09/2038	शनि	05/07/2041
मंगल	28/09/2032	राहु	02/06/2034	गुरु	10/03/2036	शनि	13/02/2039	बुध	16/12/2041
राहु	29/12/2032	गुरु	28/07/2034	शनि	31/08/2036	बुध	01/07/2039	केतु	21/02/2042
गुरु	20/03/2033	शनि	04/10/2034	बुध	02/02/2037	केतु	27/08/2039	शुक्र	02/09/2042
शनि	24/06/2033	बुध	03/12/2034	केतु	07/04/2037	शुक्र	05/02/2040	सूर्य	30/10/2042
बुध	18/09/2033	केतु	28/12/2034	शुक्र	07/10/2037	सूर्य	25/03/2040	चंद्र	03/02/2043
केतु	24/10/2033	शुक्र	09/03/2035	सूर्य	30/11/2037	चंद्र	14/06/2040	मंगल	12/04/2043
शुक्र	02/02/2034	सूर्य	30/03/2035	चंद्र	02/03/2038	मंगल	10/08/2040	राहु	02/10/2043
सूर्य	05/03/2034	चंद्र	05/05/2035	मंगल	05/05/2038	राहु	03/01/2041	गुरु	04/03/2044

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
04/03/2044		03/01/2047		04/03/2048		22/06/2048		21/12/2048	
03/01/2047		04/03/2048		22/06/2048		21/12/2048		28/04/2049	
बुध	29/07/2044	केतु	28/01/2047	सूर्य	10/03/2048	चंद्र	07/07/2048	मंगल	29/12/2048
केतु	27/09/2044	शुक्र	09/04/2047	चंद्र	19/03/2048	मंगल	18/07/2048	राहु	17/01/2049
शुक्र	19/03/2045	सूर्य	30/04/2047	मंगल	25/03/2048	राहु	14/08/2048	गुरु	03/02/2049
सूर्य	09/05/2045	चंद्र	05/06/2047	राहु	11/04/2048	गुरु	07/09/2048	शनि	23/02/2049
चंद्र	04/08/2045	मंगल	30/06/2047	गुरु	25/04/2048	शनि	06/10/2048	बुध	13/03/2049
मंगल	03/10/2045	राहु	02/09/2047	शनि	13/05/2048	बुध	01/11/2048	केतु	21/03/2049
राहु	07/03/2046	गुरु	28/10/2047	बुध	28/05/2048	केतु	12/11/2048	शुक्र	11/04/2049
गुरु	23/07/2046	शनि	04/01/2048	केतु	04/06/2048	शुक्र	12/12/2048	सूर्य	18/04/2049
शनि	03/01/2047	बुध	04/03/2048	शुक्र	22/06/2048	सूर्य	21/12/2048	चंद्र	28/04/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	93%	धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	90%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	75%	स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	70%	धन
लहसुनिया	केतु	53%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
मोती	चंद्र	51%	पराक्रम
पुखराज	गुरु	19%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	12%	व्यावसायिक हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट

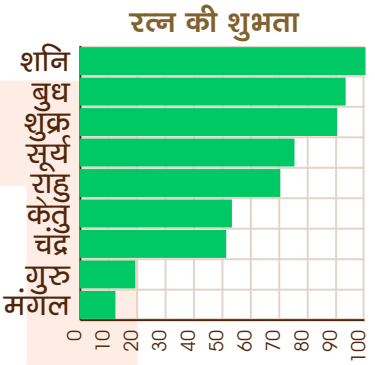

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	04/03/2021	81%	28%	12%	100%	19%	97%	100%	70%	53%
केतु	04/03/2028	62%	28%	25%	93%	19%	97%	89%	58%	66%
शुक्र	04/03/2048	62%	28%	12%	100%	19%	100%	100%	77%	59%
सूर्य	05/03/2054	88%	58%	25%	93%	31%	78%	89%	58%	31%
चंद्र	04/03/2064	81%	64%	12%	100%	19%	90%	100%	58%	31%
मंगल	05/03/2071	81%	58%	38%	81%	31%	90%	100%	58%	59%
राहु	04/03/2089	62%	28%	0%	93%	19%	97%	100%	83%	31%
गुरु	05/03/2105	81%	58%	25%	81%	44%	78%	100%	70%	53%
शनि	05/03/2124	62%	28%	0%	100%	19%	97%	100%	77%	31%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

Suraj Kumar Roy (M.A JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL,M.A ECONOMICS,M.COM FINANCE, B.ED)
A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension
9654081887
mail2suraj7836@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी चन्द्रकुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपकी कुंडली में मांगलिक दोष समाप्त हो रहा है। अतः इस मंगल के प्रभाव से आप को अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु विवाह के पश्चात पति के स्वास्थ्य पर इसका अल्प मात्रा में प्रभाव हो सकता है लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। इसके शुभ प्रभाव से आप निर्विघ्न रूप से अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगी तथा जीवन में भाई बहनों का सुख तथा सहयोग भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त धनेश्वर्य एवं सुखोपभोग की सामग्री से सुसम्पन्न रहकर सुख एवं आनंद पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा परन्तु इसके प्रभाव से आपकी शादी थोड़ी विलम्ब से सम्पन्न होगी परन्तु वैवाहिक कार्य अत्यंत ही सुगमता पूर्वक सम्पन्न होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं एक दूसरे को हमेशा सहयोग प्रदान करेंगे। यदा कदा पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा परन्तु उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य निर्विघ्न समाप्त होते रहेंगे। मांगल्य स्थान होने से यदा कदा पति का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन दाम्पत्य सुख में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आएगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके आय स्रोत प्रशस्त रहेंगे जिससे आपको लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक रूप से आप सुदृढ़ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक शिक्षित महिला होंगी। पारिवारिक सुख को पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार में हमेशा

शान्ति रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा भाई बहनों से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी। इस प्रकार आप जीवन में सुख तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका उचित रूप से मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। इस प्रकार उचित मिलान करके यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो जीवन में पूर्ण सौभाग्य धनऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करके समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय यदि किसी युवक की कुंडली में अष्टम भाव में ही मंगल हो तो ऐसे विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आपके सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विलम्ब से सम्पन्न होंगे एवं इससे समय समय पर आप दोनों का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता रहेगा। जिससे सांसारिक सुखोपभोग में आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अलावा अन्य भावों में यदि मंगल स्थित हो तो उसके शुभ प्रभाव होंगे तथा आप सभी सुखों से युक्त होकर अपना दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगी। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्तितिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– केतु
(04/03/2021 - 04/03/2028)

केतु की महादशा 04/03/2021 को आरम्भ और 04/03/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(03/02/2024 - 20/02/2025)

आपके लिए केतु महादशा 04/03/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 03/02/2024 को प्रारंभ होकर 20/02/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। वे आपके लिए लाभकारी रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचानक धनागम हो सकता है। कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन द्वारा धन आ सकता है। विदेश से भी लाभ हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। पिता धनी बनेंगे, उनके सम्मान में वृद्धि होगी। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अधिक खर्च, कार्यों में असफलता, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, प्रसन्नता और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो परिश्रम करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांतों की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(20/02/2025 - 27/01/2026)

आपके लिए केतु महादशा 04/03/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 20/02/2025 को प्रारंभ होकर 27/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मानवता की भलाई और दान धर्म के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। अध्यात्म में रुचि होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। संतान सुखकारी होगी, निवेश से लाभ होगा। वेद और मंत्रों में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं; उन्हें परिवारजनों से सुख मिलेगा। आपके पिता भाग्यशाली और धनी होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, धन में वृद्धि, प्रभावशाली मित्र आदि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(27/01/2026 - 08/03/2027)

आपके लिए केतु महादशा 04/03/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 27/01/2026 को प्रारंभ होकर 08/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, यात्राएं होंगी। उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी। छोटे भाई-बहन सुखकारी होंगे। आपका खेती से कोई संबंध हो सकता है। निवेश से लाभ होगा। शत्रुओं पर विजय होगी; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के सब काम बन जाएंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, उनका कार्यालय उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, आय में वृद्धि और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे और निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- केतु - बुध
(08/03/2027 - 04/03/2028)

आपके लिए केतु महादशा 04/03/2021 को प्रांरभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 08/03/2027 को प्रारंभ होकर 04/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

महादशा :– शुक्र
(04/03/2028 - 04/03/2048)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा को 04/03/2028 आरम्भ होकर 04/03/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित होकर सप्तम भाव को देख रहा है और इस पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शारीरिक गठन, रूप, आकार, स्वास्थ्य, शक्ति और ऊर्जा, व्यक्तित्व, समृद्धि, सद्गुण और जीवन के प्रति सकारात्मक सोच का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। यह शाारीरिक स्तर, स्वास्थ्य, शक्ति और ऊर्जा का द्योतक है। इसकी दशा के दौरान आप खुशहाल और स्वस्थ जवीन व्यतीत करेंगे। कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको परेशान नहीं करेगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र लग्न में स्थित है जो जीवन के अच्छे पहलुओं का द्योतक है। आप भद्र,, प्रसन्नचित्त तथा भावुक होंगे। शुक्र लग्न से आपकी कुण्डली के सप्तम भाव को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपका भविष्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आप इस दशा काल में अपनी चल तथा अचल संपत्ति में बिना किसी कठिनाई के वृद्धि कर पाएँगे।

व्यवसाय :

आप कला पारखी तथा मनोरंजनप्रिय होंगे। गीत, संगीत तथा नाटक में आपकी अभिरुचि होगी और आप इत्र तथा फूल इत्यादि के शौकीन होंगे। व्यवसाय के लिए कला का चयन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र की लग्न में स्थित होकर सप्तम भाव, जो जीवन साथी का भाव है, पर दृष्टि आपका विवाह सुनिश्चित करती है। विपरीत लिंग के लोग आपके आकर्षक तथा करिश्माई व्यक्तित्व के कारण आपकी तरफ खिंचेंगे। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही आनन्ददायक और उत्साहपूर्ण होगा और आपके बच्चे बहुत सुन्दर होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल शिक्षा के लिए अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(04/03/2028 - 05/07/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/03/2028 को प्रारंभ होकर 04/03/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 04/03/2028 को प्रारंभ होकर 05/07/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। शुक्र शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। क्योंकि शुक्र प्रेम, फैशन और सुंदरता की देवी का प्रतीक है, आप उत्तम वस्त्र और सुविधाओं के शौकीन होंगे। विषय-वासनाओं में रुचि होगी, विवाहेतर संबंध भी हो सकते हैं। सावधानी आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।